फुलवारी

सुविचार- अगर आप दूसरों के बारे में भी सोचते हैं तो आप सच्चे इंसान हैं.

कहानी

चालाक लोमड़ी

घने जंगल में एक चतुर और तेज दिमाग वाली लोमड़ी रहती थी. वह हमेशा अपने दिमाग का इस्तेमाल करके मुश्किल परिस्थितियों से निकल जाती थी. हालांकि, उसके मन में एक कमी हमेशा खटकती थी. उसे लगता था कि जंगल के बाकी जानवर उसे उतना सम्मान नहीं देते, जितना शक्तिशाली चीतों को मिलता है. यही सोच धीरे-धीरे उसकी महत्वाकांक्षा बन गई.

एक दिन उसने तय किया कि वह किसी भी तरह चीतों के झुंड का हिस्सा बनेगी. उसने कई दिनों तक दूर से चीतों की गतिविधियों को देखा. उनकी चाल, शिकार करने का तरीका, रहने का ढंग और आपसी व्यवहार को ध्यान से समझा. फिर उसने मौका देखकर उनके बीच रहना शुरू कर दिया. शुरुआत में चीतों ने उस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया. लोमड़ी भी पूरी कोशिश करती रही कि वह उनकी तरह दिखाई दे. वह उनकी चाल की नकल करती, उनके साथ दौड़ने की कोशिश करती और ऐसा व्यवहार करती मानो वह भी उसी समूह की सदस्य हो. उसे विश्वास था कि उसकी चालाकी कभी पकड़ी नहीं जाएगी. लेकिन सच्चाई को अधिक समय तक छिपाना आसान नहीं होता.

धीरे-धीरे चीतों ने महसूस किया कि उसके व्यवहार में कुछ अलग है. जहां चीते आत्मविश्वास और साहस के साथ हर काम करते थे, वहीं लोमड़ी हर कदम पर चालाकी और डर का सहारा लेती थी. उसकी आवाज, उसकी आदतें और उसका स्वभाव बाकी चीतों से बिल्कुल अलग था. एक दिन शिकार के दौरान उसकी असलियत सबके सामने आ गई. जब कठिन परिस्थिति आई तो वह चीतों की तरह बहादुरी दिखाने के बजाय बचने का रास्ता तलाशने लगी. तभी एक अनुभवी चीते ने उसे गौर से देखा और तुरंत पहचान लिया कि वह चीता नहीं, बल्कि एक लोमड़ी है.

चीते ने पूरे झुंड के सामने उसकी सच्चाई बता दी. सभी हैरान रह गए कि इतने दिनों तक वह उनके बीच रहकर उन्हें धोखा देती रही. इसके बाद झुंड ने उसे अपने बीच से बाहर निकाल दिया. उसकी सारी योजना एक पल में खत्म हो गई. लोमड़ी शर्मिंदा होकर जंगल के एक कोने में बैठ गई. उसे समझ में आ गया कि दूसरों जैसा बनने की कोशिश में उसने अपनी असली पहचान और आत्मसम्मान दोनों खो दिए. अगर वह अपनी बुद्धिमानी का उपयोग सही दिशा में करती, तो शायद उसे सम्मान भी मिलता और किसी को धोखा भी नहीं देना पड़ता. उस दिन के बाद लोमड़ी ने फैसला किया कि वह कभी अपनी पहचान छिपाने की कोशिश नहीं करेगी. उसने ईमानदारी और सच्चाई के साथ जीवन जीना शुरू किया. धीरे-धीरे जंगल के जानवर भी उसकी बदलती सोच को समझने लगे और उसे उसके असली स्वभाव के लिए सम्मान देने लगे. यह कहानी हमें बताती है कि जीवन में सफलता पाने के लिए किसी और का रूप धारण करने की आवश्यकता नहीं होती.

हर व्यक्ति और हर जीव की अपनी अलग विशेषता होती है. जब हम अपनी पहचान पर गर्व करते हैं और ईमानदारी के रास्ते पर चलते हैं, तभी हमें सच्चा सम्मान मिलता है. छल, कपट और दिखावा कुछ समय के लिए भले ही सफल दिखाई दें, लेकिन अंत में सच्चाई ही सामने आती है.

सीख

इस कहानी से हमे ये सीख मिलती है की धोखा और दिखावा कभी स्थायी सफलता नहीं देते. अपनी असली पहचान पर गर्व करें, ईमानदार रहें और सच्चाई के रास्ते पर चलें.

अंतर ढूंढो

नीचे दिये गये दोनों चित्र देखने में समान हैं लेकिन उनमें कुछ अंतर हैं जिन्हें आप ढूंढकर निकालें.

उत्तर- 11. सुअर का चश्मा, 2. महिला के कपड़े का रंग, 3. सब्जी की दुकान का तिरपाल, 4. पानी का जग, 5. घर की चिमनी

भूल भुलैया

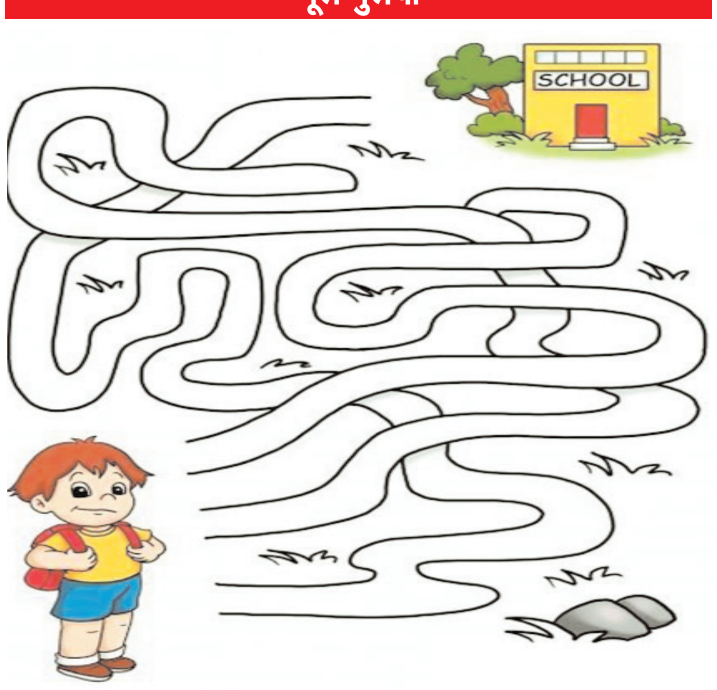

बूझो तो जानें

41.बिना पंख के उड़ता जाता,
हर घर का संदेश सुनाता.
दिखता नहीं, काम है महान,
बताओ उसका क्या है नाम
उत्तर - रेडियो तरंग

4न हाथ हैं, न पैर मेरे,
फिर भी चलूँ शहर-शहर रे
लोगों को मंज़िल तक पहुँचाऊँ,
बताओ मैं क्या कहलाऊँ
उत्तर - रेलगाड़ी

4सुबह-सुबह मैं आ जाता,
हर आँगन को जगमगाता
शाम ढले फिर छिप जाता,
बताओ कौन कहलाता
उत्तर - सूरज

4जितना निकालो उतना बढ़ता,
बाँटने से कभी न घटता
सबको देता नई पहचान,
बताओ क्या है इसका नाम
उत्तर - ज्ञान

4पानी पीकर जीता हूँ,
धूप लगे तो मर जाता हूँ
खाना पकाना मेरा काम,
बताओ क्या है मेरा नाम
उत्तर - आगे

4एक घर में रहते भाई,
सबकी होती अलग पढ़ाई
काला, नीला, लाल रंग लाएँ,
बताओ हम क्या कहलाएँ
उत्तर - किताबें

4न पैर हैं, न हाथ हैं,
फिर भी दौड़ लगाता हूं।
समय के साथ चलता रहता,
बताओ मैं क्या कहलाता हूं
उत्तर - घड़ी

4एक पैर पर खड़ा रहता,
बारिश में काम मैं आता।
धूप हो या पानी बरसे,
सबको बचाता और मुस्काता।
उत्तर - छाता

जानकारी

प्रकृति की मेहनती इंजीनियर : मधुमक्खी

मधुमक्खी प्रकृति की सबसे मेहनती और उपयोगी जीवों में से एक है. दुनिया में 20,000 से अधिक प्रजातियों की मधुमक्खियां पाई जाती हैं. इनमें से सभी शहद नहीं बनातीं, लेकिन शहद बनाने वाली मधुमक्खियां सबसे अधिक प्रसिद्ध हैं.

एक मधुमक्खी फूलों से रस इकट्ठा करती है और उसे अपने विशेष पेट में सुरक्षित रखकर छत्ते तक लाती है. वहां दूसरी मधुमक्खियां उस रस को कई बार एक-दूसरे तक पहुंचाती हैं. इस प्रक्रिया में रस गाढ़ा होकर धीरे-धीरे स्वादिष्ट शहद में बदल जाता है. बाद में वे मोम से बनी छोटी-छोटी षट्कोणीय कोशिकाओं में शहद को सुरक्षित रखती हैं. मधुमक्खियों का घर छत्ता कहलाता है. एक छत्ते में हजारों मधुमक्खियां रहती हैं. इनके परिवार में तीन प्रकार की मधुमक्खियां होती हैं रानी मधुमक्खी, श्रमिक मधुमक्खियां और नर मधुमक्खियां. रानी अंडे देती है, श्रमिक भोजन जुटाती हैं और छत्ते की देखभाल करती हैं, जबकि नर मधुमक्खियों की भूमिका अलग होती है. मधुमक्खियां फूलों से पराग एक फूल से दूसरे फूल तक पहुंचाती हैं. इस प्रक्रिया को परागण कहते हैं. परागण के बिना कई फलों, सब्जियों और फूलों के पौधे ठीक से फल-फूल नहीं सकते. इसलिए वैज्ञानिक मधुमक्खियों को खेती का सबसे बड़ा प्राकृतिक मित्र मानते हैं. मधुमक्खियां नृत्य करके भी अपने साथियों को बताती हैं कि भोजन कहां है. इसे वैगल डांस कहा जाता है. इस खास नृत्य के जरिए वे दिशा और दूरी दोनों की जानकारी देती हैं. मधुमक्खियां हमें सिखाती हैं कि मेहनत, अनुशासन और मिलकर काम करने से बड़े से बड़ा लक्ष्य हासिल किया जा सकता है.

तिरछा चलने वाला अनोखा जीव है केकड़ा

केकड़ा पृथ्वी के सबसे दिलचस्प जीवों में से एक है. वैज्ञानिकों के अनुसार दुनिया में 7,000 से अधिक प्रजातियों के केकड़े पाए जाते हैं. ये समुद्र, मीठे पानी की नदियों, झीलों और यहां तक कि मैंग्रोव के जंगलों में भी रहते हैं. केकड़े की सबसे खास पहचान उसकी तिरछी चाल है.

ऐसा इसलिए होता है क्योंकि उसके पैरों के जोड़ इस तरह बने होते हैं कि वह बगल की ओर तेजी से चल सकता है. इस तरीके से चलना उसके लिए आसान और सुरक्षित होता है. केकड़े के शरीर पर एक कठोर खोल (कवच) होता है. यह कवच उसे बड़े जानवरों और दुश्मनों से बचाता है. जैसे-जैसे केकड़ा बड़ा होता है, वह अपना पुराना कवच छोड़कर नया और बड़ा कवच बना लेता है. इस प्रक्रिया को कवच परिवर्तन कहा जाता है.

उसके दो मजबूत पंजे भी बहुत खास होते हैं. इनसे वह भोजन पकड़ता है, अपने दुश्मनों से मुकाबला करता है और जरूरत पड़ने पर खुद की रक्षा करता है. कुछ प्रजातियों में एक पंजा दूसरे से बड़ा होता है, जो उन्हें और भी अलग बनाता है. केकड़े सर्वाहारी होते हैं. वे छोटे-छोटे समुद्री जीव, पौधे, शैवाल और कभी-कभी मृत जीवों के अवशेष भी खाते हैं. इस कारण वे समुद्र और नदियों की सफाई में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं. यदि किसी दुर्घटना में केकड़े का एक पंजा या पैर टूट जाए, तो कई प्रजातियों में समय के साथ वह फिर से उग सकता है. यह प्रकृति की एक अद्भुत क्षमता है. केकड़े केवल देखने में ही अनोखे नहीं हैं, बल्कि पर्यावरण के लिए भी बहुत उपयोगी हैं.

कविता — प्यारा मोर

रंग-बिरंगा प्यारा मोर,
नाचे जैसे खुशियों का शोर

बारिश आते पंख फैलाए,
सबके मन को खूब लुभाए

नीला गला, सुंदर है चाल,
देखे उसको सारा संसार

राष्ट्रीय पक्षी, सबसे न्यारा,
लगता हमको बहुत ही प्यारा

प्रकृति का यह सुंदर उपहार,
मोर करे हर दिल गुलज़ार

हंसी-ठिठोली

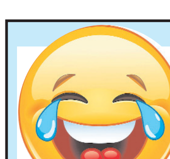

41.टीचर: बताओ, सबसे तेज़ कौन दौड़ता है
छात्र: छुट्टी की घंटी, मैडम
टीचर: वो कैसे
छात्र: बजते ही पूरी क्लास भाग जाती है

4मम्मी: बेटा, पढ़ाई कर ली
बेटा: हाँ मम्मी.
मम्मी: क्या पढ़ा
बेटा: टाइम देखकर सोने का सही समय

4टीचर: अगर परीक्षा में 100 में से 100 आएँ तो क्या करोगे
छात्र: पहले खुद को चुटकी काटूँगा, फिर रिज़ल्ट देखूँगा

4पापा: बेटा, इतना मोबाइल क्यों चलाते हो
बेटा: पापा, उँगलियों की एक्सरसाइज़ भी तो ज़रूरी है

4टीचर: बताओ, आलसी किसे कहते हैं
छात्र: सर, जो सवाल का जवाब देने में भी आलस करे
टीचर: उदाहरण छात्र: ....

4दोस्त: तुम रोज़ सुबह जल्दी क्यों उठते हो
दूसरा दोस्त: ताकि अलार्म को लगे कि उसकी मेहनत सफल हो गई.

4टीचर: बताओ, सबसे ज्यादा नशा किस चीज में होता है
छात्र: पढ़ाई में मैडम। टीचर: वो कैसे
छात्र: क्योंकि किताब खोलते ही नींद आने लगती है।

4मम्मी: बेटा, बाजार से सब्जी लेते समय क्या ध्यान रखना चाहिए
बेटा: मम्मी, सब्जी ताजी होनी चाहिए।
मम्मी: और कुछ
बेटा: हां, दुकानदार मुझे देखकर महंगी न लगाए.

प्रेरक प्रसंग

भगत सिंह की वीरता ने जगाई आजादी की अमर अलख

पंजाब के एक छोटे से गांव में 28 सितंबर 1907 को एक बालक का जन्म हुआ. उसका नाम रखा गया भगत सिंह. उनका परिवार देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत था. घर का माहौल ऐसा था कि बचपन से ही उनके मन में भारत माता के प्रति असीम प्रेम जाग उठा. एक दिन छोटे भगत सिंह अपने पिता के साथ खेत पर गए. वहां उन्होंने मासूमियत से पूछा, क्या इन खेतों में बंदूकें उग सकती हैं. उनके पिता ने मुस्कुराकर पूछा कि ऐसा क्यों सोचते हो. भगत सिंह ने जवाब दिया, अगर बंदूकें उगेंगी तो हम उनसे अंग्रेजों को भारत से बाहर निकाल देंगे.' इस बात ने उनके मन में छिपे देशप्रेम को साफ कर दिया. समय बीतता गया और अंग्रेजों का अत्याचार बढ़ता गया. जलियांवाला बाग की दुखद घटना ने भगत सिंह के मन को गहराई से झकझोर दिया. वे उस स्थान की मिट्टी अपने साथ लेकर आए और देश को आजाद कराने का संकल्प लिया.

बड़े होने पर उन्होंने अपने साथियों के साथ मिलकर आजादी की लड़ाई में हिस्सा लिया. उनका उद्देश्य किसी से नफरत फैलाना नहीं, बल्कि भारतवासियों में स्वतंत्रता और आत्मसम्मान की भावना जगाना था. वे मानते थे कि अन्याय के खिलाफ आवाज उठाना हर नागरिक का कर्तव्य है.

जब अंग्रेज सरकार ने उन्हें गिरफ्तार किया, तब भी उनके चेहरे पर डर नहीं था. अदालत में उन्होंने पूरे आत्मविश्वास के साथ अपने विचार रखे. जेल में रहते हुए भी उन्होंने किताबें पढ़ीं, अध्ययन किया और अपने साथियों का हौसला बढ़ाया. आखिरकार 23 मार्च 1931 को भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव ने हंसते-हंसते देश के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिए. आज भी जब भारत का तिरंगा गर्व से लहराता है, तब शहीद भगत सिंह का नाम सम्मान के साथ लिया जाता है. उनकी कहानी हर बच्चे को यह सिखाती है कि साहस, सच्चाई, अनुशासन और देशप्रेम जीवन की सबसे बड़ी ताकत हैं. हमें अपने देश से प्रेम करना चाहिए, ईमानदारी से पढ़ाई करनी चाहिए और समाज के लिए अच्छे कार्य करने चाहिए. यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी उस महान क्रांतिकारी को, जिसने अपना पूरा जीवन भारत माता की आजादी के लिए समर्पित कर दिया. सच्चा वीर वही है जो निस्वार्थ भाव से अपने देश, समाज और सत्य के लिए खड़ा हो. भगत सिंह का जीवन हमें साहस, त्याग और राष्ट्रप्रेम का अमूल्य संदेश देता है.

बिंदु मिलाओ

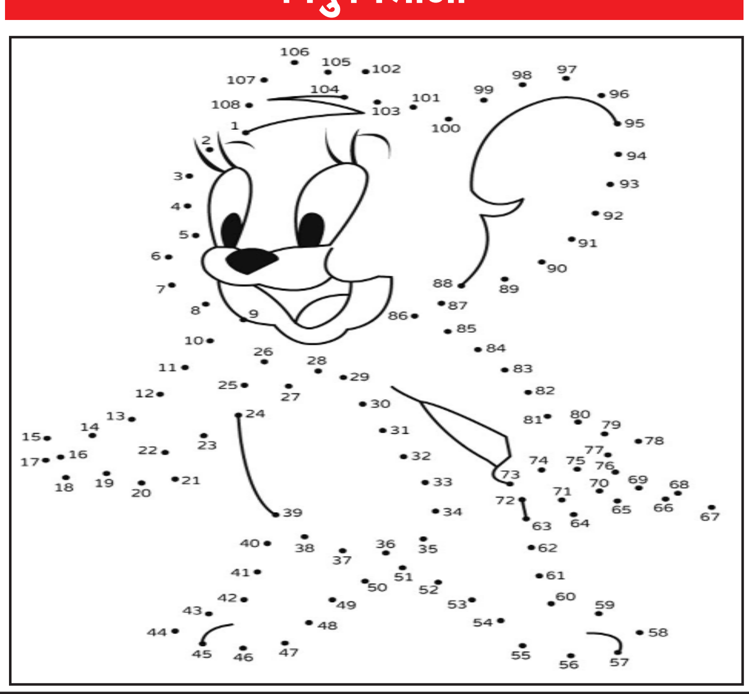

रंग भरो

बच्चों अपनी कहानियां, कविताएं, पेंटिंग्स, लेख, रचनाएं आदि bhopalnav@gmail.com **पर मेल करें.**